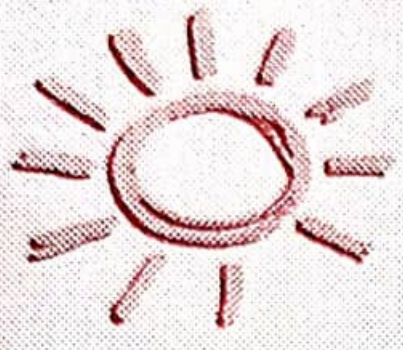

रूपक और साक्षात्कार

डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया

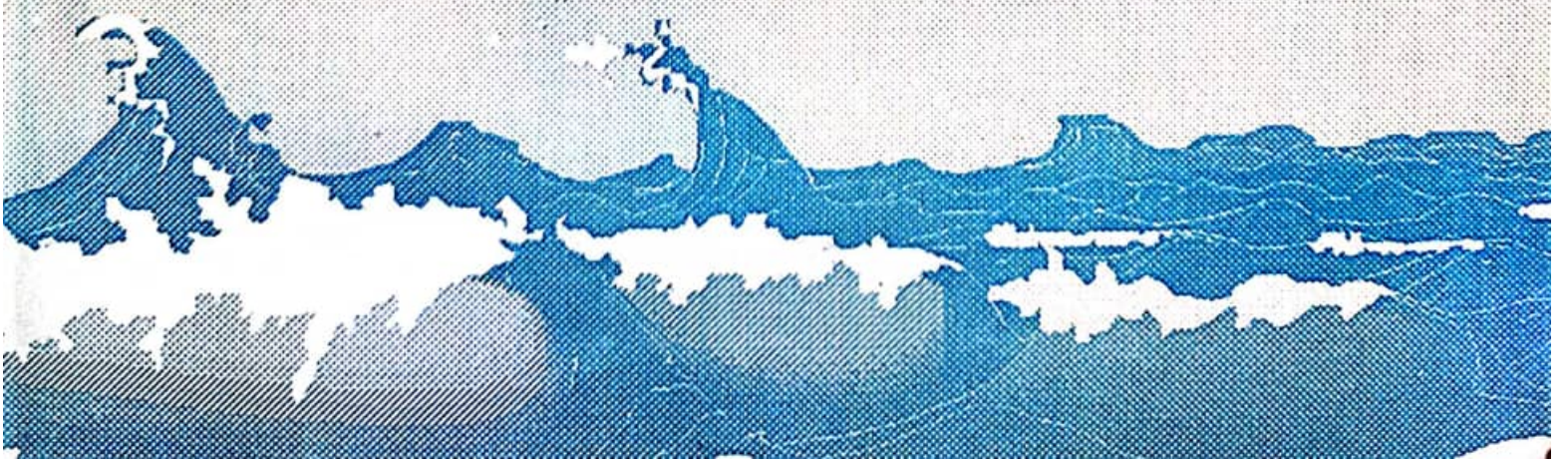

रूपक और साक्षात्कार

लेखक
डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया

© डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया

प्रथम संस्करण – 2005

मुद्रक :
जिला सहकारी संघ मुद्रणालय
छतरपुर (म.प्र.)

रूपक और साक्षात्कार

संग्रह के संबंध में -

साहित्य की अनेक विधाओं में नाटक और साक्षात्कार भी हैं प्राचीन काल में नाटक की लोकप्रियता सर्वोपरि थी, तभी तो उसे पंचम वेद तक कहा गया है। सार्वजनिक मंचों पर नाटकों का मंचन जनता के मनोरंजन का साधन था। नाटक को दृश्य काव्य के अन्दर परिगणित किया जाता है। रूपक नाटक का ही एक भेद है।

आकाशवाणी, छतरपुर से रूपकों के प्रसारण की श्रृंखला बरसों से चल रही है। मेरे अनेक रूपक प्रसारित हो चुके हैं। विशेष अवसरों पर इनका प्रसारण होता रहा है। कई वर्ष पूर्व आकाशवाणी, छतरपुर ने पंचतंत्र की कहानियों के आधार बच्चों के लिए रूपकों का प्रसारण किया था। उस समय मुझसे भी लिखवाया गया था। असावधानी वश मेरे द्वारा लिखित कई रूपक अप्राप्त हैं। आकाशवाणी में भी वे उपलब्ध नहीं है। जो उपलब्ध हो सके, उनमें चुनकर संग्रह में दिये गये हैं। प्रथम चार रूपक क्रमशः रीतिकाल के प्रथम आचार्य महाकवि केशवदास, काव्य के प्रेमभावी कवि रसखान, (जिनका मूल नाम सैयद इब्राहीम खान था) जो कृष्ण की लकुटी और कामरिया पर तीनों लोकों का राज्य निछावर करने को तैयार थे, कुंडलियों के सिद्धहस्त लोककवि गिरिधर कविराय और भारत माता को गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाले असाधारण काव्य–प्रतिभा के धनी पं. घासीराम व्यास (जिनका उद्घोष था – गोलियों को खाना, शीश फाँसी पै झुलाना, मर जाना वीरों, न लजाना दूध माता का) के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित है। इनके माध्यम से उन्हें भली प्रकार समझा जा सकता है।

बाद के तीन रूपक बालोपयोगी हैं जो पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित हैं। पंचतंत्र की कहानियाँ पंडित विष्णुशर्मा द्वारा राजपुत्रों को शिक्षा–दीक्षा देने के लिए लिखी गई थीं जो आज भी अत्यन्त उपयोगी तथा रोचक हैं। इन पर आधारित रूपकों के प्रसारण के पीछे उद्देश्य यही था कि बच्चों को उनसे परिचित करवाकर उन्हें शिक्षित और संस्कारित किया जावे। ये रूपक बड़े चर्चित और लोकप्रिय हुये थे। इस प्रकार की

श्रृंखलाओं का प्रसारण होते रहना चाहिये। नई पीढ़ी को ज्ञान–सम्पन्न बनाने के ये उत्तम माध्यम है। संग्रह के प्रथम खंड में यही सात रूपक दिये गये हैं।

खंड दो में बंगला के प्रतिष्ठित साहित्यकार–कथाकार श्री विमल मित्र, छायावादोत्तर, काव्यधारा के प्रख्यात कवि श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', भारतीय संस्कृति के पोषक तथा संस्कृत साहित्य के शीर्ष विद्वान, पूर्व कुलपति, वर्तमान में राज्यसभा के सदस्य पंडित विद्यानिवास मिश्र, रीति साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान तथा काव्य–शास्त्र के रचयिता सागर विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष आचार्य डॉ. भागीरथ मिश्र तथा आधुनिक युग के तुलसी मानस–मर्मज्ञ पं. रामकिंकर जी उपाध्याय से लिए गए साक्षात्कार संकलित हैं। इन साक्षात्कारों में उनके साहित्य–चिंतन और जीवन–दृष्टि का गंभीर उद्‌घाटन है जिनसे विचार–विमर्श के नए आयाम मिलते हैं।

कुछ रूपक और सभी साक्षात्कार इसके पूर्व पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। उल्लेखनीय यह भी है कि साक्षात्कारों के प्रकाशन से पूर्व इन्हें संबंधित जनों को दिखाकर, पुष्टि करवाकर उनके प्रकाशन की अनुमति ली गई थी। वर्षों पूर्व लिखे इन रूपकों और लिए गए साक्षात्कारों को संग्रह के रूप में साहित्य जगत को सौंपते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। विश्वास है कि पाठक इनसे लाभान्वित होंगे।

इस अवसर पर मैं आकाशवाणी छतरपुर तथा पत्र–पत्रिकाओं के सम्पादकों एवं संबंधित विद्वानों के प्रति अपना आभार और धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। यदि आकाशवाणी ने आग्रह करके इन रूपकों को न लिखवाया होता और विद्वानों ने साक्षात्कार का अवसर न दिया होता तो यह कृति कैसे बन पाती। इसका श्रेय उन्हीं को है।

मक़र संक्रांति
14 जनवरी 2005

–डॉ. गंगा प्रसाद बरसैंया
सेवा निवृत्त प्राचार्य
12, एम.आई.जी., चौबे कॉलोनी,
छतरपुर (म.प्र.)
✆ : (07682) 241024

अनुक्रम

संग्रह के सम्बन्ध में

खण्ड एक : रूपक

1. तुम आदि मध्य अवसान एक 1
2. प्रेमपथी रसखान 15
3. लोकविभूति गिरिधर कविराय 29
4. व्यास वन्दनीय सरताज सरताजों का 44
5. बुद्धि बड़ी या शक्ति 51
6. पराक्रम और चतुराई 57
7. बड़ों का प्रताप 63

खण्ड दो : साक्षात्कार

1. अच्छी कृतियाँ रोज पैदा नहीं होतीं 67
   – विमल मित्र
2. आधुनिकता का भी रेजीमेन्टेशन हो गया है 73
   – रामेश्वर शुक्ल अंचल
3. साहित्य जीवन से कटता जा रहा है 79
   – डॉ. विद्यानिवास मिश्र
4. साहित्यकार को और भी अधिक निष्ठा से कार्य करना चाहिए 85
   – डॉ. भागीरथ मिश्र
5. रचना में युगानुकूल परिवर्तन अवश्यंभावी है 90
   – पं. रामकिंकर उपाध्याय

परिचय

नाम : गंगा प्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
जन्मतिथि : ६ फरवरी १९३७
शिक्षा : एन.ए., पी.एच–डी.
सेवा : म.प्र. के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य, स्नातकोत्तर प्राचार्य पद से ३१–१२–९६ को सेवानिवृत्त।
निवास : एम.आई.जी.–१२, चौबे कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.) ☎ : (०७६८२ २४१०२४)

पुस्तकें :

(१) हिन्दी साहित्य में निबन्ध और निबंधकार (शोध प्रबंध) (२) हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार (३) छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार (४) आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति, (५) रस विलास, (६) वीर विलास, (७) सुदामा चरित, (८) चिन्तन–अनुचिन्तन, (९) बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकार (शोधग्रंथ) (१०) अरमान वर पाने का (व्यंग्य), (११) निंदक नियरे राखिये (व्यंग्य) (१२) अथ काटना. कुत्ते का भइजा जी को (व्यंग्य) (१३) तुलसी के तेवर, (१४) कर्म और आराधना, (१५) रचना से रचना तक, (१६) सृजन–विमर्श, (१७) समवाय, (१८) नारी : एक अध्ययन (१९) मेरी जन्मभूमि : मेरा गाँव, (२०) रूपक और साक्षात्कार, (२१) लोक वाटिका, (२२) शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग तथा अन्य.

सम्मान–पुरस्कार :

(१) महामहिम उप राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल जी शर्मा द्वारा साहित्य श्री।
(२) अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा "साहित्य श्री" तथा भारत भाषा भूषण से सम्मानित (३) नागरी प्रचारणी सभा, कानपुर द्वारा – 'साहित्य भारती', (४) तुलसी सम्मान व विद्रोही पुरस्कार, (५) ओरछा महोत्सव व केशव जयंती समारोह समिति द्वारा "मित्र मिश्र अलंकरण" एवं पुरस्कार, (६) लोक मंगल एवं लोक संस्कृति सेवा निधि ट्रस्ट उरई (उ.प्र.) द्वारा 'गौरी शंकर द्विवेदी शंकर' अलंकरण एवं पुरस्कार। (७) अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

संस्थाओं से सम्बद्ध :

(१) अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा के कला संकाय के पूर्व डीन, हिन्दी बोर्ड के अध्यक्ष व कार्य परिषद के सदस्य (२) पूर्व डायरेक्टर, महाकवि केशव अनुसंधान केन्द्र, ओरछा, म.प्र. (३) म.प्र., आंचलिक साहित्यकार परिषद के उपाध्यक्ष (४) बुन्देलखण्ड कला संस्कृति परिषद, छतरपुर के अध्यक्ष (५) अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, छतरपुर के अध्यक्ष। आदि।